जून-अगस्त, 2023

बातूनी

अंक-131

जून-अगस्त, 2023

बातूनी

अंक-131

इस अंक में...

- बातूनी की बात 3
- बादल बोले गरड़–गरड़ 4
- अदला–बदली 5
- बारिश, बरसात 6
- ईमानदारी 7
- चिड़िया, अखबार वाला 8
- सीता–गीता 9
- रमेश और राक्षस 10
- तितली रानी, बंदर मामा 11
- जिन्न, मेरी बकरी 12
- भूत का डर 13
- फूल, नाव 14
- संगठन में शक्ति 15
- टमाटर, पेड़ 16
- मोर बोला, मैं तोता हूँ 17
- भूतपूर्व बच्चों का अनुभव 18
- अभिभावक का अनुभव 19
- हाथी, तोता 20
- बापू 21
- डरावना कुआ 22
- चिट्ठी 23
- चिट्ठी 24
- सूरज दादा, चूहे की शादी 25
- हाथी व मगरमच्छ 26
- हिम्मत की जीत 27

मुख्य आवरण : फजीन, समूह–महक
पिछला आवरण चित्र : फोटो कॉलाज
बॉर्डर बनाया : विजय, हरीश, समूह–खुशबू

दिगन्तर विद्यालय द्वारा
प्रकाशित

संपादक मंडल
हेमन्त शर्मा
नौरतमल पारीक
रामजीलाल गुर्जर
सूर्य प्रकाश प्रजापत

कम्प्यूटर सैटिंग
ख्यालीराम स्वामी

कम्पोजिंग
गणपत सैन

सम्पर्क (मुख्य कार्यालय)

दिगन्तर
टोडी रमजानीपुरा, खो नागोरियान रोड़,
जगतपुरा, जयपुर-302017
Email : vidyalay@digantar.org
www.digantar.org

बातूनी की बात

प्यारे बच्चो!

मुझे पता है कि आप लोग मेरा बेसब्री से इन्तजार कर रहे होंगे। क्योंकि आप पढ़ना सीखने में बातूनी की रचनाओं का काफी उपयोग करते हो। मुझे भी आपकी बहुत याद आ रही है। आप सभी जानते हैं कि हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है, जहां शासन संबंधी सभी जिम्मेदारियां आम जनता के हाथों में होती है। जनता स्वयं अपना वोट देकर अपने नेता का चुनाव करती है। जो जनता के प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते हैं। मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूं कि हमारे राज्य में इसी माह इसी व्यवस्था के अन्तर्गत इन प्रतिनिधियों का चयन चुनावों के माध्यम से किया जायेगा।

आगे कुछ दिनों तक तुम्हें अपने गांव, ढाणी, मौहल्ले आदि में इसी चुनावी माहौल को देखने का मौका मिलेगा तो तुम लोग इससे संबंधित अपने अनुभव लिखना मत भूलना।

आपकी प्यारी बातूनी।

– समायरा, समूह–उजाला

बादल

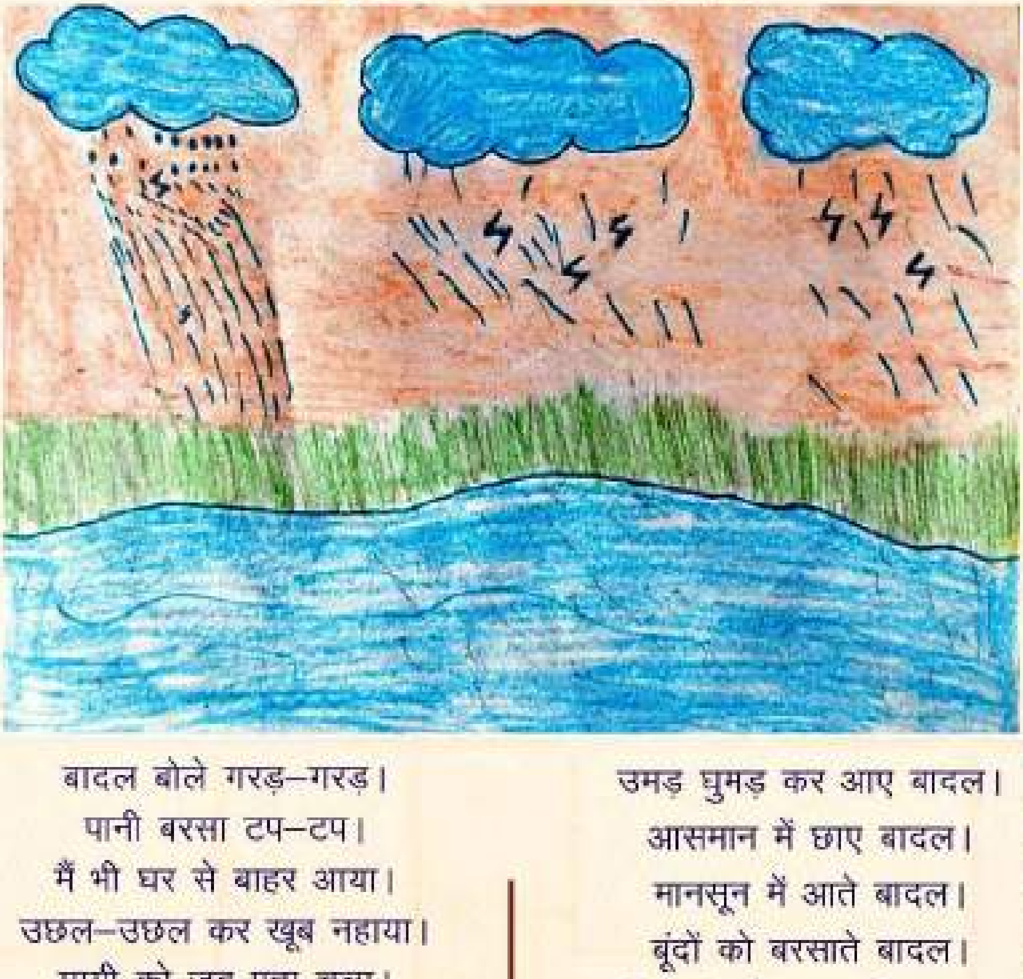

बादल बोले गरड़–गरड़।
पानी बरसा टप–टप।
मैं भी घर से बाहर आया।
उछल–उछल कर खूब नहाया।
मम्मी को जब पता चला।
डंडा लेकर भागी आई।
मैं पानी में छप–छप कर भागा।
मम्मी के मैं हाथ न आया।
बरसात में मैं खूब नहाया।

– फिजा, समूह–खूशबू

उमड़ घुमड़ कर आए बादल।
आसमान में छाए बादल।
मानसून में आते बादल।
बूंदों को बरसाते बादल।
बिजली को चमकाते बादल।
खेतों को लहराते बादल।
सागर से है, बनते बादल।
सागर में मिल जाते बादल।

– तरुण, समूह–रोशनी

अदला–बदली

एक गांव में एक आदमी रहता था। वह बहुत गरीब था। अपने परिवार का पेट पालने के लिए मिट्टी के बर्तन बनाता था। एक दिन वह अपने खेत पर गया, उसे एक आदमी ने रोका और कहा कि मेरे खेत में बैंगन लगे हुए हैं। अगर तुम्हें बैंगन चाहिए तो तुम ले लो। फिर उसने दो बैंगन तोड़ लिए और उन्हें अपने घर ले आया। और अपनी पत्नी से कहा ये लो बैंगन और इनकी सब्जी बना दो। उसकी पत्नी ने बैंगन लिए तो उनकी खुशबू इतनी अच्छी थी कि उसकी पत्नी ने एक बैंगन तो चखने में ही खा लिया और दूसरे को लेकर सब्जी बनाने के लिए ले गई तभी उसका पति आया और बोला, ''एक बैंगन ही कैसे रह गया दूसरा कहां है ?'' उसने कहा कि वह तो मैंने खा लिया। तब वह दोबारा खेत पर गया और बोला कि भाई मुझे बैंगन और चाहिए, तब उसने कहा कि आपको जितने चाहिए उतने ले जाइए। अब वह दस–बारह बैंगन लेकर आया। आदमी को धन्यवाद दिया साथ ही उसको एक अपनी तरफ से उसका बनाया हुआ मटका दिया। इस प्रकार दोनों की आपस में दोस्ती हो गई और खुशी–खुशी रहने लगे।

– काजल, समूह–खुशबू

बारिश

छम–छम करती आई बारिश।
बादलों से आई बारिश।
अपने मन को भाई बारिश।
छम–छम करते आते बच्चे।
बारिश में नहाते बच्चे।
सबके मन को भाते बच्चे।
जोर–जोर से धड़–धड़ करते बादल।
सबके मन को भाते बादल।
मोर नाचे छम–छम–छम।
बच्चे नाचे धम–धम–धम।
सबके मन को भाती बारिश।
छम–छम–छम करती आई बारिश।

– प्रवीण, समूह–रोशनी

बरसात

बारिश आई, बारिश आई।
टप–टप करती बारिश आई।
मोर भी आया, चिड़िया भी आई।
भालू आया, शेर भी आया।
धमक–धमक करता आया।
शेर और चीता में हुई भिड़ंत।
जिराफ और घोड़ा भी आया।
वो भी ठुमक–ठुमक कर नाच दिखाया।
बारिश आई, बारिश आई।

– काजल, समूह–खुशबू

ईमानदारी

एक बहुत छोटा गांव था। उस गांव में एक लड़का रहता था। लड़के का नाम रामू था। वह बहुत अच्छा और ईमानदार था। रामू जंगल में जाता और लकड़ियां काटकर बाजार में बेचता, जो पैसा मिलता उनसे वह अपना गुजारा करता था। रामू के गांव में लोग बहुत बीमार रहते थे, इससे वह परेशान रहता था। एक दिन सुबह रामू जंगल पहुंचा तो एक आवाज आती है, "मेरे पास आओ"। रामू सोच में पड़ गया। यह आवाज दरअसल एक पेड़ की थी, वह पेड़ के पास जाता है, तो पेड़ बोलता है, "बेटा मैं पेड़ हूं, तुम मुझे काटकर अपना ही नुकसान कर रहे हो। तुम मुझे अच्छे और समझदार लगते हो, फिर पेड़ क्यों काटते हो?" रामू बोला, "मैं खुद यह काम नहीं करना चाहता पर मेरी मजबूरी है।" मेरे गांव के लोग बीमार रहते हैं, ऊपर से कोई काम भी नहीं है, इसलिए परिवार का पेट पालने के लिए मैं पेड़ काटता हूं। तब पेड ने उससे कहा, "इन पेडों को काटने की जगह इनकी देखभाल करो और उनसे मिलने वाले फल, फूल, दवाई, जड़ी बूटियों से तुम अपने गांव वालों की सेवा करो, तुम्हें जरूर लाभ होगा।" रामू के पेड़ की बात समझ में आ गयी और वह उनकी देखभाल करने लगा। इससे रामू को बहुत फायदा हुआ। अब वह अपने परिवार और गांव वालों के साथ खुशी–खुशी रहने लगा।

– सादिया, समूह–खुशबू

चिड़िया

चिड़िया आई, चिड़िया आई,
फर–फर करती चिड़िया आई,
चोंच में अपनी तिनका लाई,
तिनके से वह घोंसला बनाई।
चिड़िया आई, चिड़िया आई,
दाल का दाना लाई।
चिड़िया आई, चिड़िया आई,
छोटी–सी इक चिड़िया आई,
अपने बच्चों को उड़ना सिखाई।
चिड़िया आई चिड़िया आई।।

– सोफिया, समूह–खुशबू

अखबार वाला

अखबार वाला आया है।
अखबार लेकर आया है।
दुनिया की खबरें लाया है।
सुबह–सुबह वह आया है।

मम्मी–पापा, दादा, भैया।
अखबार पढ़कर हो जाते खिवैया।
अखबार वाला आया है।
अखबार लेकर आया है।

– मीनाक्षी, समूह–खुशबू

सीता–गीता

एक गांव था। उस गांव का नाम लालपुरा था। लालपुरा गांव में बहुत सारे लोग रहते थे। उस गांव में एक घर में दो लड़कियां रहती थी। उनके माता–पिता आठ साल पहले मर चुके थे। वे दोनों अनाथ थीं। एक लड़की गीता बड़ी होकर आईपीएस अधिकारी बनना चाहती थीं, तो दूसरी लड़की सीता बड़ी होकर पुलिस अधिकारी बनना चाहती थी, लेकिन उन दोनों की पढ़ाई नहीं हो पा रही थी। क्योंकि उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। वे भीख मांग कर अपना पेट पालती थीं। एक दिन उन्होंने इस गांव के एक अनाथ आश्रम को देखा, वे दोनों उस अनाथ आश्रम में चली गई। वहां उन्हें एक व्यक्ति मिला, जिसने दोनों से ठीक से बात की, तब उन्होंने अपने मन की इच्छाएं बताई। उस व्यक्ति ने उन दोनों को एक अच्छी स्कूल में डाल दिया और वहां के प्रिंसिपल से बात करके कहा कि उनके लिए जिस चीज की आवश्यकता हो मेरे से बात कर लेना। वे दोनों उस स्कूल में पढ़ने लगीं। दोनों रोज पढ़ने जाती थीं। खूब मन लगाकर पढ़ाई करती और मेहनत करती। एक दिन जो उनका सपना था, वह उन्होंने मन लगाकर मेहनत करके खुशी–खुशी पूरा किया। बाद में उन्होंने उस अनाथ आश्रम में रहकर अनाथ आश्रम वालों की भी खूब सेवा की। इसके बाद में वहीं रहने लगीं और खुशी–खुशी अपना जीवन बिताने लगीं।

– तरुण, समूह–रोशनी

रमेश और राक्षस

एक बार किसी गांव में एक चोर रहता था। उसका नाम रमेश था। एक रात को वह चोरी कर रहा था। तभी वहां घर के मालिक का कुत्ता भौंकने लगा। वह उससे डर गया और वहां से भाग गया। एक दिन वह गांव में घूम रहा था। उसे एक राक्षस दिखाई दिया। वह गांव में तबाही मचा रहा था। उसने सोचा यह तो सब को मार देगा। उसने राक्षस का ध्यान अपनी तरफ खींचा। वह उसे जंगल की तरफ भगा कर ले गया। अचानक बारिश होने लगी और बिजली कड़कने लगी। रमेश ने देखा कि जंगल में एक गड्ढा बना हुआ है रमेश उस गड्डे को पार कर गया। लेकिन राक्षस उसी में गिर गया। जिसमें उसने बहुत सारे पत्थर और डाल दिए वह राक्षस बाहर नहीं आ पाया। सुबह होने पर रमेश गांव वालों को बुला लाया। गांव वालों ने मिलकर राक्षस को मार दिया। सभी गांव वालों ने मिलकर रमेश को धन्यवाद दिया। रमेश बहुत खुश हुआ। उसने चोरी करना छोड़ दिया। वह मजदूरी करके अपना पेट भरने लगा।

– मनीष, समूह–तितली

तितली रानी

तितली रानी बात सुनो।
फूलों पर तुम राज करो।
नीले–पीले और गुलाबी।
फूलों का तुम रस ले जाती।
फर्र–फर्र कर तुम उड़ती हो।
रंग–बिरंगी होती हो।
दूर–दूर तक जाती हो।
सबका मन बहलाती हो।

(बादल समूह के बच्चों से बातचीत कर बनाई गई कविता)

बंदर मामा

बंदर मामा आओ ना,
मेरे घर भी आओ ना।
आओ ना भाई आओ ना,
हलवा खा कर जाओ ना।

बंदर मामा आ गए,
कुर्सी पर वे बैठ गए।
हलवा खाया गप्प से,
गले में अटका सप्प से।
आंसू भरकर घर को भागे
घर जाकर वह बहुत रोए।

हलवा ठंडा करके क्यों ना खाए,
इस बात पर वह बहुत पछताए।

– मोहित, समूह–तितली

जिन्न

एक गांव में एक किसान का परिवार रहता था। एक दिन किसान खेत में काम कर रहा था। तभी उसे एक जादूई चिराग मिला। उस पर मिट्टी जमी हुई थी। किसान उसे साफ करके घर ले गया। फिर उसे घर पर जाकर खोला तो उसमें से एक जिन्न निकला। किसान व उसकी पत्नी उसे देखकर डर गये। जिन्न ने उनसे कहा कि आपको डरने की जरुरत नहीं है। मैं एक जिन्न हूं, मैं तुम्हारा भला करने आया हूं। इसके बाद किसान की पत्नी ने जिन्न से कहा कि आप हमारा भला करने आये हो तो हमारी इच्छा पूरी कर दो, हम आपका अहसान नहीं भूलेंगे। जिन्न ने कहा, "तुम्हारी क्या इच्छा है ?" उन्होंने बोला, "हमारी तीन इच्छा हैं, पहली, हमें आप अमीर बना दो। दूसरी, हमें एक जादूई चक्की दे दो। तीसरी, हमें कोई समस्या आये तो जरुरत पड़ने पर आप आकर उसे दूर करने का काम करें।" जिन्न ने उनकी तीनों इच्छाएं पूरी कर दी और वे परिवार के साथ मजे से रहने लगे।

(उजाला समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर बनाई गई कहानी)

मेरी बकरी

बकरी मेरी बकरी है,
देखो कितनी सुंदर है।
बहुत प्यारी बकरी है,
दूध देती बकरी है।
चारा खाती बकरी है,
जंगल में चरती बकरी है।
म्यें–म्यें करती बकरी है,
सुबह चरने जाती है।
शाम को आ जाती है,
प्यासी मेरी बकरी है,
पानी पीती बकरी है।
बकरी मेरी बकरी है।

– जहीर, समूह–सागर

भूत का डर

एक रामनगर नाम का गांव था। उसके पास एक कब्रिस्तान था। कब्रिस्तान में एक भूतिया बंगला था। गांव वालों का मानना था कि उस बंगले में जो भी जाता है वह लौटकर वापस नहीं आता है। एक बार एक राम नाम का अमीर आदमी उस गांव में आया और उसको वह बंगला पसंद आया। उसने गांव वालों से पूछा, "इस बंगले का मालिक कौन है ?" गांव वालों ने उसे बताया कि इस बंगले का मालिक मर चुका है। उन्होंने राम से कहा कि इस बंगले में एक भूत रहता है। जो भी इस बंगले में जाता है वह लौटकर वापस नहीं आता है। राम ने कहा, "मैं उस बंगले में जाऊंगा, भूत कुछ नहीं होता है।" गांव वालों ने उसे बहुत रोका, पर वह नहीं माना। वह बहुत बलवान आदमी था। वह उस बंगले में गया। वहां उसे एक बहुत बड़ा पिंजरा दिखाई दिया। पिंजरे में बहुत सारे लोग कैद थे। तभी वहां पर भूत बनकर एक आदमी आया। जिसने मुंह पर मास्क लगा रखा था। राम ने उसे एक जोरदार चांटा और धक्का मारा। राम ने उसके मुंह पर से मास्क हटा दिया। राम समझ गया कि यही आदमी भूत बनके लोगों को डरा रहा है और जो लोग यहां आते हैं उनको यह इस पिंजरे में बंद कर देता है। उसने पुलिस को फोन किया। पुलिस वहां आई और उस आदमी को पकड़ लिया। पुलिस ने पिंजरे में बंद सभी लोगों को छुड़ा लिया। गांव वालों ने राम की बहुत तारीफ की। अब उनको समझ में आ गया कि भूत कुछ नहीं होता है। यह आदमी हमको भूत बनकर पागल बना रहा था व हमारा पैसा लूट रहा था। पुलिस उसको ले गई और गांव वाले ने राम का बहुत सम्मान किया।

—अजहर, समूह–सागर

फूल

फूल कितने प्यारे–प्यारे,
फूल खिले रंग–बिरंगे।
फूल खिले तरह–तरह के,
फूल खिले प्यारे–प्यारे।
तितली उड़कर उन पर जाती,
रस चूसकर वह सेहत बनाती।
फूलों का रंग पंखों में भर लेती,
कितनी सुंदर वह लगती है।
मधुमक्खी उड़ कर उन पर जाती,
रस पीकर वह शहद बनाती।
शहद को छाते में भरती,
शहद को हम खाते।
खाकर अपनी सेहत बनाते,
हम तरोताजा हो जाते।

– प्रिया, समूह–तितली

नाव

नदी पार कराती हो, इंसानों को घुमाती हो।
मछुआरों को ले जाती हो, नदी बीच जाल डलवाती हो
ढेर सारी मछलियां पकड़ते हैं, तुम में भरकर लाते हैं।
लकड़ी की तुम होती हो, बहुत तैरना जानती हो।
तुम प्यारी हमारी नाव हो, प्यारी हमारी नाव हो।

– फरमान, दानीस, समूह–तितली

संगठन में शक्ति

एक बहुत बड़ा जंगल था। उसमें बहुत सारे जानवर रहते थे। वे सभी अच्छे दोस्त थे। उसी जंगल के पास एक तालाब था। इस तालाब में कछुआ और मगरमच्छ रहता था। दोनों अच्छे दोस्त थे। सभी जानवर जंगल में पानी पीने के लिए तालाब के किनारे जाते थे। एक दिन अचानक नदी के किनारे शिकारी आया। शिकारी ने तालाब के किनारे पानी पीते हुए बहुत सारे जानवरों को देखा तो सोचा कि यहां पर तो बहुत सारे जानवर पानी पीने के लिए आते हैं। अब मैं शिकार आसानी से कर पाऊंगा। शिकारी भागते हुए घर गया और घर से जाल व बंदूक लेकर आया। शिकारी ने तालाब के किनारे आकर देखा तो वहां पर कोई भी जानवर नहीं मिला। शिकारी बहुत दुखी हुआ और वापस घर लोट गया। शिकारी घर पर बैठा–बैठा सोचा कि जंगल के सभी जानवर पानी पीने के लिए तालाब के किनारे रोज आते होंगे। अगले दिन सुबह शिकारी ने शिकार करने लिए तालाब किनारे जाकर जाल बिछाया और झाड़ियों के पीछे छिप गया। लेकिन शिकारी को जाल बिछाते हुए कछुआ और मगरमच्छ ने देख लिया। दोनों ने सोचा हमें जंगल के जानवरों की मदद करनी चाहिए। कछुआ दौड़कर जंगल की तरफ गया और सभी जानवरों को सूचित किया कि नदी पर पानी मत पीना, वहां शिकारी ने जाल बिछा रखा है। दिनभर कोई भी जानवर पानी पीने नहीं निकला। शिकारी परेशान होकर उस जंगल से चला गया। सभी जानवरों ने उसको धन्यवाद दिया।

(परी समूह के बच्चों के द्वारा बनाई गई कहानी)

टमाटर

देखो देखो लाल टमाटर
महंगा हो गया देखो टमाटर
हमने खाया सबने खाया
टमाटर खाकर खून बढ़ाया
अब ना खाते हम यह टमाटर
महंगा हो गया देखो टमाटर
इतना महंगा कैसे खाएं
भाव सुनकर आंसू आए
टमाटर को अब हम कैसे खाएं
खून अपना कैसे बनाएं
लाल टमाटर महंगा हो गया है
अब यह टमाटर हम कैसे खाए ।

(परी समूह के बच्चों के द्वारा बनाई गई कविता)

पेड़

हरे भरे होते हैं पेड़,
सबसे न्यारे होते हैं पेड़।
इन पर घर बनाते हैं,
पक्षी सुनहरे।
इनसे मिलती हवा है शुद्ध।
इनसे मिलती छाया है निराली।
हरे भरे होते हैं पेड़।
देश की सुन्दरता बढ़ाते हैं पेड़।
पेड़ हैं भई पेड़ हैं,
हरे भरे पेड़ हैं।

– प्रीती वर्मा, समूह–महक

मोर बोला

बच्चे नाचे छम–छम–छम
ढोल बाजे डम–डम–डम
मोर बोला वाह वाह, पिंहू–पिंहू
बादल गरजे धड़–धड़–धड़
बिजली चमकी तड़–तड़–तड़
मोर बोला वाह वाह, पिंहू–पिंहू
पानी बसरे टप–टप–टप
मेंढ़क नाचे छप–छप–छप
मोर बोला वाह वाह, पिंहू–पिंहू

– अंजली पाल, समूह–महक

मैं तोता हूँ

मैं तोता हूँ, मैं तोता हूँ
हरे रंग का दिखता हूँ
लाल मेरी चोंच है, हरे मेरे पंख हैं
मिट्ठू–मिट्ठू मैं करता...

आसमान में मैं उड़ता,
खुली हवा में सैर करता
लाल–हरी मिर्च,
लाल टमाटर मैं खाता
मिट्ठू–मिट्ठू मैं करता...
मैं तोता हूँ, मैं तोता हूँ
हरे रंग का दिखता हूँ

– मुस्कान, समूह–महक

भूतपूर्व बच्चों का अनुभव

दिगन्तर विद्यालय को अगर मैं अपने सपनों का विद्यालय कहूं तो यह गलत नहीं होगा, क्योंकि मेरी ही तरह सभी बच्चों को एक ऐसे विद्यालय की तलाश होती है, जहां उन्हें प्यार से समझाकर पढ़ाया जाये और अच्छा व्यवहार किया जाये। यदि कोई गलती हो जाये तो आपको समझाया जाये कि यह गलत है और इस प्रकार ठीक किया जायेगा। हमारे सभी के माता–पिता को भी अपने बच्चों के लिए एक ऐसा ही विद्यालय की जरूरत होती है। जहां उनके बच्चे हंसते–हंसते विद्यालय जायें और आएं। इसी प्रकार दिगन्तर विद्यालय मेरे सपनों का विद्यालय है। यहां मैंने पढ़ने के साथ–साथ खेलना–कूदना, सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना और बात करना सीखा। कविता–कहानियों का सृजन करना भी सीखा। सभी कार्यों में आगे रहना तथा कम्प्यूटर चलाना जैसी कई गतिविधियां सीखी। मुझे पता ही नहीं चला कि मेरे पांच साल कब हंसते–खेलते ही गुजर गये।

– शुभम (भूतपूर्व छात्र)

नमस्ते साथियो,

मैं मुस्कान, अभी मैं सरकारी विद्यालय में 12वीं कक्षा में पढ़ती हूं। इससे पहले मैं दिगन्तर विद्यालय में ही पढ़ती थी। 10वीं कक्षा तक की पढ़ाई मैंने इसी विद्यालय से की है। दिगन्तर विद्यालय क्यों अन्य विद्यालयों से अलग हैं– क्योंकि यहां विचारों की स्वतंत्रता है, अपनी बातों को कहने का हक है। हम बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी बात रख सकते हैं। शनिवार की सभा में हमें एक मंच मिलता है। जिसमें हमें अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने का मौका मिलता है। यहां पर किसी भी समस्या का समाधान सब बच्चे और शिक्षक मिलकर निकालते हैं। फिर सब मिलकर निर्णय तक पहुंचते हैं। यहां का पुस्तकालय बहुत बड़ा है। जिसका उपयोग हम पढ़ने में लेते हैं अन्य विद्यालय में शायद ही इतना बड़ा पुस्तकालय हो। इस विद्यालय को मैं कभी भूल नही पाऊंगी, क्योंकि इसमें हमें पढ़ना ही नहीं बल्कि जीने की सही राह भी सिखलाई है। यहां के शिक्षकों को भी मैं हमेशा याद रखूंगी, जिन्होंने हमें सही मार्गदर्शन दिया।

– मुस्कान कंवर (भूतपूर्व छात्रा)

अभिभावक का अनुभव

विद्यालय की शुरुआत और संघर्ष : पहले यह विद्यालय बंध्याली ढाणी से शुरू हुई। हम जब पढ़ते थे तो बबूल के पेड़ों की छांव में पढ़ाया जाता था। उसके बाद वर्तमान में जहां जे.एन.यू. का अस्पताल है, वहां एक गोल बिल्डिंग में विद्यालय बनाया गया। विद्यालय की उस जमीन को बख्शी ने सरकार से खरीद लिया। इसके बाद विद्यालय के लिये संघर्ष शुरू हुआ। हमने रैली निकाली। जिसमें लगभग 600 आदमी–औरतें शामिल हुये। बहुत संघर्ष करने के बाद हमें इस विद्यालय के लिए यह जमीन मिली और 20 जुलाई को दिगन्तर विद्यालय, भावगढ़ में विद्यालय शुरू हुआ।

दिगन्तर विद्यालय में पढ़ाई : दिगन्तर विद्यालय में पढ़ाई का माहौल बहुत ही सहज रहा है। हर बच्चे पर ध्यान दिया जाता है। बच्चे शिक्षक से अपनी बात को कह पाते हैं। मुझे नौरत जी का पढ़ाना सबसे ज्यादा अच्छा लगता था।

अब इस विद्यालय से मेरी बेटी साबिरा ने 10वीं कक्षा पास कर ली है और सोफियान, सोफिया, दानिश पढ़ते हैं।

हाथी

हाथी आया हाथी आया।
धम धम धम हाथी आया।
देखो भाई हाथी आया।
कितना ऊंचा कितना लंबा।
हाथी आया हाथी आया।
गन्ना यह खाता है।
सबको यह घुमाता है।
ऊंची–ऊंची पहाड़ियों पर यह चढ़ता है।
झूम–झूम कर चलता है।
सूंड हिला–हिला कर चलता है।
सबको प्यारा लगता है।

(परी समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर सृजित की गई।)

तोता

तोता–तोती गए बाजार।
वहां से लाए एक अनार।।

तोता–तोती ने खाया अनार।
तोता हो गया बीमार।।

तोती ने बनाया अचार।
दोनों ने खाया अचार।

– जोया, समूह–उजाला

बापू

बापू हमारे आंखों के तारे,
सारी दुनिया से वो न्यारे,
जात–पात में भेद ना करते,
सबको एक समान समझते,
डंडा, झोली पहचान थी उनकी,
सदा ढकी रहती चश्में से आंखें उनकी,
बापू हमारे आंखों के तारे,
सारी दुनिया से वो न्यारे,
देश को आजाद कराने में,
लगा दी जान की बाजी,
दिला दी हमें आजादी,
बापू हमारे आंखों के तारे,
सारी दुनिया के वो प्यारे।

– काजल, समूह–खुशबू

डरावना कुआ

एक जंगल था। उस जंगल में एक कुआ था। वह कुआ डरावना था। उसके पास कोई भी नहीं जाता था। उस जंगल के पास एक छोटा–सा गांव था। वहां सभी तरह के लोग रहते थे। उस गांव में रमेश नाम का एक लड़का रहता था। वह बकरियां चराता था। एक दिन उसकी बकरी उस कुए के पास चली गई। रमेश अपनी बकरी को ढूंढ़ने लगा। ढूंढ़ते–ढूंढ़ते उस कुएं के पास पहुंच गया। उसने देखा कि बकरी उस कुएं के पास चर रही है। जैसे ही रमेश अपनी बकरी को लेने गया तो कुएं ने बकरी को अपनी ओर खींच लिया। यह देखकर रमेश डरकर गांव की ओर भागा। गांव में जाकर उसने सबको बात बताई। गांव वालों को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। उनमें से एक वृद्ध आदमी ने बोला, "यह सही कह रहा है।" जंगल के उस कुएं में किसी की आत्मा निवास करती है लेकिन उनमें से एक पढ़ा लिखा व्यक्ति बोला, "नहीं ऐसा कुछ नहीं है।" बकरी घास चरते–चरते पैर फिसल जाने के कारण गिर गई। उसे किसी कुए ने नहीं खींचा। चलो हम सब मिलकर बकरी को बाहर निकलते हैं। गांव वाले उसके साथ मिलकर बकरी को जिंदा बाहर निकाल लेते हैं। यह देखकर रमेश खुश होता है और सबका डर खत्म हो जाता है और अब सभी मिलकर हंसी–खुशी रहने लग जाते हैं।

(गुलाब समूह के बच्चों द्वारा एक–एक वाक्य बोलकर सृजित की गई)

चिट्ठी

प्रिय बातूनी,
नमस्ते।

मैं यहां पर कुशल पूर्वक हूँ और आशा करती हूँ कि आप भी वहां पर कुशलपूर्वक होंगी। आपसे बात किए हुए काफी समय हो गया है। मैं आपसे बहुत सारी बातें करना चाहती हूँ, मिलना चाहती हूँ, मेरी पढ़ाई के बारे में मैं आपसे कुछ बातें शेयर करना चाहती हूँ। मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। मैं आपको मेरी स्कूल के बारे में बताना चाहती हूँ। मेरी स्कूल में पांच दिन शिक्षण कार्य होता है और शनिवार को अलग गतिविधियां होती है, जैसे चित्र बनाना, खेल खेलना, झालर–झूमर बनाना, मिट्टी के खिलौने बनाना। इन सबको करने में हमें बहुत आनंद आता है और हम बहुत सारी नई–नई चीज़ सीखते हैं। पांच दिन 3:00 बजे छुट्टी होती है और शनिवार को 12:00 बजे छुट्टी होती है। पांच दिन जो शिक्षण कार्य होता है, उनमें मुझे अंग्रेजी का कालांश अच्छा लगता है क्योंकि मुझे अंग्रेजी पढ़ना अच्छा लगता है और अन्य लोगों को अंग्रेजी बोलते हुए देखती हूँ तो मुझे भी ऐसा लगता है कि मैं भी फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना सीख लूं। इसलिए मुझे अंग्रेजी का कालांश बहुत अच्छा लगता है।

आपके इंतजार में।

शेष कुशल।
आपकी
सीमा, समूह–रोशनी

चिट्ठी

प्रिय बातूनी,

नमस्ते।

मैं यहां पर कुशलपूर्वक हूँ। आशा करती हूँ कि आप भी वहां कुशलपूर्वक होंगी। आपसे बातें किए बहुत समय हो गया। मुझे आपसे बातें करना बहुत अच्छा लगता है। मैं आपको अपने बारे में कुछ बताना चाहती हूँ। मैं दिगन्तर विद्यालय में पढ़ती हूँ। मेरी पढ़ाई बहुत अच्छी चल रही है। मेरे विद्यालय में फुटबॉल और कराटे शुरू हो गए हैं। मैंने अपना नाम कराटे में लिखवाया है। हमारे कराटे वाले शिक्षक हमें अच्छे से कराटे सिखाते हैं। मुझे कराटे बहुत पसंद हैं। मैंने कराटे में कई चीजें सीखी हैं और यही चीजें मेरे जीवन में काम आएगी।

आपसे आगे बात करने के इंतजार में।

शेष कुशल।

आपकी

फजीन, समूह–महक

– रानिया, समूह–उजाला

सूरज दादा

सूरज दादा, सूरज दादा।
रोज सवेरे आते हो।
दिन भर खूब तपाते हो।
सांझ ढले कहां जाते हो।
नजर नहीं तुम आते हो।
काला अंधेरा फैलाते हो।
दिन को सोने–सा चमकते हो।
उजियारा फैलाते हो।
सबको जीवन देते हो।
सूरज दादा, सूरज दादा।
सारे जग के तुम दादा हो।

(यह कविता सागर समूह से गुंजन, राज, गौरव, मिस्बा, आलिया–।, आलिया–।।, सुल्तान, बादल व राहुल के द्वारा बनाई गई)

चूहे की शादी

चूहे जी की शादी है।
आज बुलावा आया है।
पौं पौं बैंड बजायेगा।
चूहा दुल्हन लायेगा।
अच्छे–अच्छे कपड़े दे दो।
पहन के उनकी शादी में जाऊंगा।
नाचूंगा गाऊंगा लड्डू पेड़े खाऊंगा।
शादी में खूब धूम मचाऊंगा।

– निशा रैगर, समूह–महक

हाथी व मगरमच्छ

एक जंगल था। जंगल के किनारे एक नदी बहती थी। उस नदी में बहुत सारे जानवर रहते थे। जैसे मछली, मगरमच्छ आदि। जंगल में भी बहुत सारे जानवर रहते थे। जंगल का राजा हाथी था। हाथी बहुत ही दयालु था। वह सभी की मदद करता था। एक दिन हाथी नदी किनारे घूम रहा था। उसे बहुत जोर से प्यास लगी। वह नदी में पानी पीने लगा। पानी पीते–पीते हाथी ने देखा की एक मगरमच्छ पानी के किनारे घायल पड़ा है। उसके पैरों में से खून निकल रहा है। हाथी मगरमच्छ के पास गया और उससे पूछा, "तुम्हारे पैरों को क्या हो गया ?" मगरमच्छ ने कहा, "मेरे पैरों को शेर ने पकड़ लिया था।" मैं बड़ी मुश्किल से जान बचाकर आया हूं। इसलिए मेरे पैरों से खून निकल रहा है। हाथी ने कहा, "तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारे पैरों पर अभी दवाई लगाकर उन्हें ठीक कर दूंगा।" हाथी जंगल में गया। वहां से डॉक्टर भालू को लेकर आया। डॉक्टर भालू ने डरते–डरते मगरमच्छ के पैरों का इलाज किया। मगरमच्छ बोला, "डॉक्टर भालू आपको मुझसे डरने की जरूरत नहीं है। आप मेरी जान बचा रहे हो। मैं आपको नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा।" मगरमच्छ ने हाथी और भालू को धन्यवाद दिया। उस दिन के बाद से वे सब दोस्त बन गए।

– अजहर, समूह–सागर

हिम्मत की जीत

एक बहुत बड़ा जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। जानवरों में बहुत प्यार प्रेम था और कभी एक–दूसरे से लड़ते–झगड़ते भी नहीं थे। उस जंगल के पास एक बहुत बडा दानव भी रहता था। दानव से पूरे जंगल के जानवर डरते थे। क्योंकि उसे रोज एक जानवर खाने के लिए देना पड़ता था और अगर ना देते तो वह जंगल में ही आ जाता था। इसलिए रोज एक जानवर देना पड़ता था। लेकिन स्वेच्छा से कोई भी जानवर तैयार नहीं होता था, बस उनकी मजबूरी होती थी। एक दिन दूसरे जंगल से एक शेर आया तो उसे देखकर सारे जानवर डर गए। तब शेर ने कहा, "डरो मत, मैं तुम्हारी सहायता करने आया हूँ।" भी जानवर हथियार लेकर शेर के पास चले जाते हैं। शेर और जानवर मिलकर दानव के पास जाते हैं तथा जोर–जोर से आवाज देकर दानव को बाहर बुलाते हैं। जैसे ही दानव दहाड़ते हुए बाहर आता है, तो सारे जानवर डर जाते हैं। लेकिन शेर बोलता है, "डरने से काम नहीं चलेगा। सबको हिम्मत दिखानी पड़ेगी।" फिर सब जानवर मिलकर दानव पर आक्रमण कर देते हैं। दानव मर जाता है। सभी जानवर शेर को धन्यवाद देते हैं और उसके बाद जंगल के जानवर खुशी–खुशी रहने लगते हैं।

– सोनाक्षी, समूह–रोशनी